दिसम्बर 2016

वर्ष 29 पंचम अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 आपके पास जो है, उसे सहेज कर रखो

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान
16 आर्थिक परिदृश्य
20 राष्ट्रीय परिदृश्य
23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
31 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 युवा प्रतिभाएं
38 विज्ञान समाचार
40 सारभूत तत्व कोष
44 वस्तुनिष्ठ छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान

लेख

49 समसामयिक लेख–16-18 वर्ष आयु के किशोर अपराधी वयस्क
50 राजनीतिक लेख–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चार अफ्रीकी देशों की यात्रा
52 पर्यावरण लेख–वायु प्रदूषण से उपजती घातक समस्याएं
53 कैरियर लेख–60वीं, 61वीं एवं 62वीं सम्मिलित संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा–2016 : बिहार राज्य सिविल सेवा परीक्षा अधिकार नहीं, दायित्व है सर्वोपरि

हल प्रश्न-पत्र

57 उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय समीक्षा अधिकारी एवं सहायक समीक्षा अधिकारी परीक्षा, 2016
66 राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2015
82 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग राजस्व निरीक्षक परीक्षा, 2016
92 आगामी न्यू इण्डिया एश्योरेन्स क.लि. प्रशासनिक अधिकारी (जनरलिस्ट) प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
102 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) परीक्षा, 2015
115 मध्य प्रदेश पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2016

वार्षिक रिपोर्ट 2015-16

123 रसायन, उर्वरक एवं पेट्रोलियम-रसायन सम्बन्धी अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण-विहंगावलोकन
125 महत्वपूर्ण भौगोलिक टिप्पणियाँ
127 प्रमुख नियुक्तियाँ
128 क्या आप परिचित हैं ?
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

आपके पास जो है, उसे सहेज कर रखो

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

यीशु का प्रसिद्ध वाक्य है कि—जिसके पास 'है' उसे और दिया जाएगा जिसके पास नहीं है उसके पास जो है वह भी छीन लिया जाएगा.'

ऊपरी तौर से देखा जाए, तो बड़ा अन्यायपूर्ण कथन लगता है कि जिसके पास है उसे भला और अधिक देने की आवश्यकता कहाँ ? जरूरत तो उसे है जिसके पास नहीं है और जिसके पास नहीं है उसके पास जो है वह भी उससे ले लिया जाएगा, भला ऐसा क्यों ? ये कहाँ का न्याय हुआ ?

किन्तु 'सत्य बड़ा विचित्र है.' वह हमारी साधारण सोच से भिन्न सौन्दर्य लिए हुए है. बाइबिल के इस उपर्युक्त वचन के अर्थ को समझेंगे, तो ही यह कथन समझ में आएगा. जब यीशु ऐसा कहते हैं कि जिसके पास 'है' उसे और दिया जाएगा तब हकीकत में वे मानसिक व भावनात्मक स्तर के सत्य को इंगित कर रहे हैं. वे यह कह रहे हैं कि जो कोई 'है' की मानसिकता में जीता है, सद्भाव को महसूस करता हुआ जीता है, वह सद्भाव के प्रभाव से और अधिक पाने का हकदार बन सकेगा, किन्तु जो 'नहीं है' की मानसिकता में जीता है वह अभावपूर्ण सोच के कारण सदा अभावों को ही पाएगा. अगर आप जीवन में उत्तरोत्तर उपलब्धियाँ पाना चाहते हो, तो आप कभी भी जो नहीं मिला उसको मत सोचो. जो मिला है उसका आदर करो. जो आपके पास पहले से ही 'है' उसे सहेजो. उसका सम्मान करो. जो 'है' का सम्मान करता है वह अधिकाधिक होने को आकर्षित करता है. जो प्राप्त का सदुपयोग करता है, वह अप्राप्त को प्राप्त करने की दिशा में आगे कदम बढ़ाता है, किन्तु जो प्राप्त की अवहेलना करता है वह प्राप्त को तो गँवाता ही है साथ ही अप्राप्त को पाने की योग्यता भी अर्जित नहीं कर पाता.

परेशान युवक जीवन में घबराकर मृत्यु को वरने के लिए कूदने को तत्पर था कि उसके सामने एक प्रौढ़ पहुँच गया. उसने उस युवक को तनिक ठहरने को कहा और पूछा कि अपने जीवन से इतने निराश क्यों हो ? वह युवक बोला कि आज तक जो पाना चाहा सब छिनता गया, जो भी मिला वह अपर्याप्त रहा इतनी मेहनत करके बमुश्किल डिग्री हासिल कर पाया, तो जब जॉब के लिए हुए इंटरव्यू में निरन्तर फेल होता गया. इतनी कठिन प्रतिस्पर्द्धा है, जरूरतें पूरी होना भी असम्भव है, जीना इतना कठिन है इससे तो मर जाना ही बेहतर है. वे प्रौढ़ सज्जन बोले—'अच्छा एक काम करो, आपको मर जाना है, तो कोई बात नहीं, ये आपकी अपनी इच्छा है, अपनी जिन्दगी के आप स्वयं मालिक हैं, किन्तु अगर आपको पैसों की इतनी कमी है कि आप मरने जा रहे हैं, तो ज़रा अपनी एक आँख बेच दीजिए, काफी पैसे मिल जाएंगे. वह युवक बोला—आप ऐसी बात कैसे कह सकते हैं, तब प्रौढ़ सज्जन ने उसे समझाया कि हमारी इस देह का हर एक अंग कितना कीमती है. हमें मानव शरीर की रचना करने में कितने युग लगे, तब हमने सम्पूर्ण प्रकृति से उत्तम-उत्तम परमाणुओं को चुन-चुन कर अपनी देह को बनाया. अगर कोई वैज्ञानिक आविष्कारकर्ता 6-7 दशक लगातार कोई सुन्दर यान बनाए, तो क्या वह उस यान को यूँ ही बिना किसी त्रुटि के, बिना उसे उपयोग में लिए जला देगा या नष्ट कर देना चाहेगा क्या ? तुम क्यों प्राप्त देह का, प्राप्त परिवार का महत्व नहीं समझ पा रहे हो ? जो मिला है उसको उपेक्षित करने पर तुम फिर कभी इस मानव देह व अनमोल मन को प्राप्त नहीं कर सकोगे.